SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महाप्राण निराला के उपन्यास में सामाजिक विचार

उर्मिला वर्मा, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
श्यामलाल साकेत, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
उर्मिला वर्मा, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
श्यामलाल साकेत, हिंदी विभाग,
एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह,
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 01% on 30/07/2021

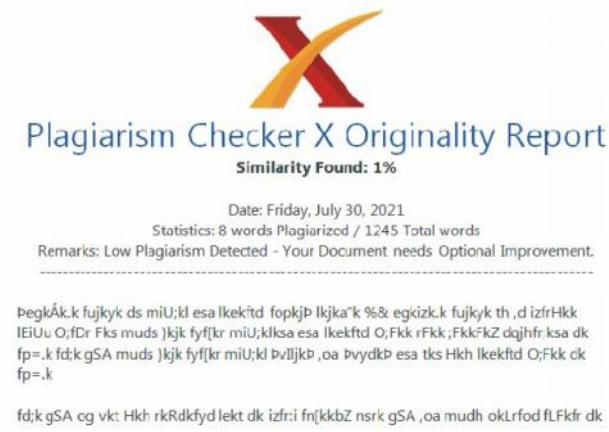

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 8 words Plagiarized / 1245 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Þegkǻk.k fujkyk ds miU;kl esa lkekftd fopkjÞ lkjka"k %& egkizk.k fujkyk th ,d izfrHkk lEiUu O;fDr Fks muds }kjk fyf[kr miU;klksa esa lkekftd O;Fkk rFkk ;FkkFkZ dqjhfr ksa dk fp=.k fd;k gSA muds }kjk fyf[kr miU;kl ÞvIljkÞ ,oa Þvydk Þ esa tks Hkh lkekftd O;Fkk ck fp=.k

fd;k gSA cg vk: Hkh rkRdkfyd lekt dk izfr:i fn[kkbZ nsrk gSA ,oa mudh okLrfod fLFkfr dk

शोध सार

महाप्राण निराला जी एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे उनके द्वारा लिखित उपन्यासों में सामाजिक व्यथा तथा यथार्थ कुरीतियों का चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखित उपन्यास "अप्सरा" एवं "अलका" में जिस सामाजिक व्यथा का चित्रण किया है, उसमें आज भी तात्कालिक समाज का प्रतिरूप दिखाई देता है, एवं उनकी वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सकता है। जहाँ "अप्सरा" में उन्होंने एक अभिजात, कुलीन, भावुक एवं एक वेश्या की प्रेमकथा का वर्णन है, तथा वही "अलका" में उन्होंने भौतिकवादी मनुष्य का रूझान एवं उसका विघटन के यथार्थ चित्रण रूप को उकेरा है।

मुख्य शब्द

सामाजिक व्यवस्था, कुरीतियां, सामाजिक उत्थान, आधुनिक.

महाप्राण निराला एक उच्च कोटि के प्रतिभाशाली साहित्यकार थे। एक प्रतिभाशाली साहित्यकार होने की उनकी एक अलग पहचान थी। उन्होंने सामाजिक संबंधी कई प्रकार की रचनाओ की रचना की। उनकी रचनाओं में सामाजिक विचार एवं वास्तविकता विद्वान है। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंद पंत, महादेवी वर्मा के साथ–साथ में छायावाद के चौथे प्रमुख स्तंभ के रूप में गिने जाते है। उन्होंने अपने समकालीन रचनाकारो की भाँति साहित्य के क्षेत्र में सभी विधाओं में रचना की एवं सफल रहे।

उनके उपन्यास में सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ व्यवहारिकता पाई गई इसलिये उनके उपन्यासों का अध्ययन आवश्यक हो गया। महाप्राण जी के व्यक्तित्व के बारे में यह कहा जाता है कि वे एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति थे। उन्होंने समाज को बहुत बारीकी से देखा और

समझा था। उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो कुछ भी घटा एवं जो कुछ भी हुआ उन्होंने उन सबका एक निश्पक्ष एवं संवेदनशील दर्शक के रूप में पर्यवेक्षण किया एवं गहराई से अनुभव कर इन अनुभूतियों को अपनी प्रतिभाशाली रचना शैली के द्वारा अपनी रचनाओं में व्यक्त करते चले गये। उन्होंने अपने युग के समाज में हर दिन जमीदारों के अत्याचारो से पीड़ित, दलित, शोषित एवं कृषकों की दयनीय स्थिति को अपने उपन्यासों में प्रकशित किया।[1] निराला जी का जीवन कठिनाईयों से गुजरा है।

अपने जीवन की सारी परेशानियों के बावजूद जो सुख के थोड़े बहुत पल मिले थे उन सबको एकत्रित कर उन्होंने अपने विभिन्न उपन्यासों में उसका चित्रण स्वाकथन के रूप में किया है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में सामाजिक उपन्यास लिखने वालों में प्रेमचन्द्र जी का नाम सर्वप्रथम आता है। चूँकि उन्होंने इसकी शुरूआत की थी तथा उनके बाद बहुत सारे रचनाकारो ने उनकी इस परम्परा का पालन करते हुये कई समाज से संबंधित उपन्यास लिखे। किन्तु महाप्राण जी ने उपन्यास, कथा, और साहित्य में इसलिये कदम रखा क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में कुछ ही रचनाओं ने अपना स्थान बनाने में सफल हुई हैं। निराला जी इस बात को भली–भांति जानते थे किन्तु निराला आशावदी रहे, अतः वे इस दिशा में आगे बढते रहे।

महाप्राण ने जब अपना पहला उपन्यास "अप्सरा" के बारे में लिखा था इन बड़े–बड़े तोंद वाले औपन्यासिक सेठो की महफिल में मेरी दंसिताधरा "अप्सरा" उतरे हुये बिल्कुल संकुचित नही हो रही है। उसे विश्वास है कि वे वह एक ही दृष्टि के अनन्य भक्त कर लेगी।[3] प्रेमचन्द्र तथा निराला दोनो के उपन्यास सामाजिक चेतना को जागृत करते है। लेकिन उन दोनो की सामाजिक जागरण में मौलिक अंतर है। प्रेमचन्द्र ने अपने उपन्यास में जो सामाजिक जागरण की अभिवृत्ति दी वह उनका देखा हुआ ज्ञान था, जबकि महाप्राण निराला के सामाजिक जागरण में भोगा हुआ यथार्थ है। यह जागरण उनके जीवन का प्रत्यक्ष अंग है। इतना ही नही उनके द्वारा लिखे गये सभी उपन्यास सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक तथा वे सभी तत्व भरे है, जो उनके उपन्यास कथा साहित्य को आप के समय में भी महत्वपूर्ण बनाते है। निराला जी ने जिसके बारे में भी लिखा है या जो भी कथा या पात्र है उनकी सभी समस्याओं को निराला ने बहुत करीब से देखा। निराला जी द्वारा लिखित उपन्यास हैः (1) अप्सरा (2) अलका (3) निरूपमा (4) प्रभावती (5) कुल्लीभाट (6) बिल्लेसुरबकरिहा (7) चोटी की पकड़ (8) काले कारनामें।

इनमें से अप्सरा, अलका, निरूपमा, कुल्लीभाट, बिल्लेसुरबकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामें सामाजिक उपन्यास है। जबकि प्रभावती उपन्यास में ऐतिहासिक तत्वों का समावेश होने के कारण यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। लेकिन इसमें भी निराला जी ने उच्चवर्गीय सामाजिक व्यवस्था तथा उसके स्वरूप को दर्शाया है। अगर हम निराला के सामाजिक उपन्यास की चर्चा करे तो हम सर्वप्रथम अप्सरा की बाते करेगें। अप्सरा निराला की पहली रचना है। अप्सरा उपन्यास की नायिका एवं वैश्या पुत्री है जिसका अभिजात कुलीन युवक से प्रेम है, उपन्यास में इन दोनो की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।

"अप्सरा" उपन्यास में निराला जी ने इसमें कुछ गंभीर सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया है। वैश्यावृत्ति की समस्या हमारे समाज में कई दशकों से चली आ रही है। वैश्यावृत्ति के कारण ही बड़े–बड़े रहीस राजा महाराजा तथा अमीर घराने के लोग पतन के गर्त में चले जाते है, परन्तु समाज में वैश्याओ का होना पुरूषों की ही भोग विलास तथा कुटिल वासना का ही परिणाम है जिसनें स्त्री को इस दलदल में ढ़केला है। सबसे पहले जब इन धनी लोगो के घरों में कोई भी उत्सव या त्यौहार का आयोजन होता था तो वे लोग वैश्या को बुलाकर मुजरा करवाते थे। यही तात्कालिक समाज की विडम्बना थी।[4] महाप्राण जी ने इन सामाजिक समस्याओं को पहचान तथा इसका सफल चित्रण किया लेकिन इसके साथ–साथ इन्होंने अच्छी तरह से शहरी सामाजिक जीवन को भी चित्रित किया, जिसे पढ़कर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि आधुनिकता की छाप इस प्रकार से शहरी जीवन में घुलती जा रही है और वे लोग आधुनिकता की ओर आकर्षित होते चले जा रहे है। इन सब बाहरी दिखावे के अंदर मन की आँखे मित्रों के आगमन की प्रतिक्षा कर रही थी जहाँ बड़े–बड़े आदमियो का यह हाल था।[5] यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि आधुनिक युग में शुरू से ही भारतीय समाज को जकड़ा है। किस प्रकार आधुनिक भारतीय समाज आधुनिकता

का मतलब जाने बगैर इसके समस्त तत्वों को आनंद में लिप्त होना चाहता है एवं अपनी सभ्यता और संस्कृत में आधुनिकता को शमिल कर लेना चाहता था।

तात्कालिक समाज के चरित्र का प्रकाशन निराला जी ने वस्तुबी से किया। इस प्रकार आधुनिकता के खोखले रंग में समाज स्वयं को रंग चुना था अतः निराला जी ने समाज की आधुनिकता पर करारा प्रहार किया है। इसका उदाहरण उनके उपन्यास "अलका" में वस्तुबी देखा जा सकता है तथा इस अलका उपन्यास में उन्होंने भारतीय ग्रामीण समाज की भी दुर्दशा का वर्णन किया है। जब विजय जो कि अलका का पति है नाम बदलकर गाँव में किसानों की शिक्षा और संगठन करने का काम करता है तो गाँव के किसानों को डरा–धमकाकर उसे जेल भेज देते है और किसान भी जमीदारो के अत्याचार के डर से उसका साथ छोड़ देते है। इन सभी समस्याओं को निराला जी ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है।

निष्कर्ष

आधुनिकता की छाप शहरी जीवन में घुलती जा रही है और लोग आधुनिकता की ओर आकर्षित होते चले जा रहे है। इन सब बाहरी दिखावे के अंदर मन की आँखे मित्रों के आगमन की प्रतिक्षा कर रही थी। यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि आधुनिक युग नें शुरू से ही भारतीय समाज को जकड़ा है। आधुनिक भारतीय समाज आधुनिकता का मतलब जाने बगैर इसके समस्त तत्वों के आनंद में लिप्त होना चाहता है एवं अपनी सभ्यता और संस्कृति में आधुनिकता को शामिल कर लेना चाहता है।

संदर्भ सूची

1. महरोत्रा, बलदेव प्रसाद, *''कथा शिल्पी निराला''*, लोक भारती प्रकाशन, 1984 पृ.सं. 39।
2. नवल, नंदकिशोर, *''निराला रचनावली–भाग–4''*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, कुल्लीभाट की भूमिका, 2006, पृ.सं.–22।
3. सिंहल, शशिभूषण, *''हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ''*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1998, पृ.सं.–14।
4. नवल, नंदकिशोर, *''निराला रचनावली–भाग–3''*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006, अप्सरा उपन्यास, पृ.सं.25।
5. नवल, नंदकिशोर, *''निराला रचनावली–भाग–3''*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006, अप्सरा उपन्यास पृ.सं. 25–26।

****